OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 6

श्रेष्ठ कर्म का पैरामीटर

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जब कोई व्यक्ति इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आता है तो पहले दो-तीन दिनों में ही उसे यह बात तो स्पष्ट कर दी जाती है कि पवित्रता या निर्विकार मनोवृत्ति को धारण करना और योग का अभ्यास करना हमारे पुरुषार्थ के दो मुख्य स्तम्भ हैं।

फिर, पवित्रता की व्याख्या करते हुए हम यह स्पष्ट करते हैं कि मन को, निर्विकार एवं निर्मल बनाना या विचार, व्यवहार, व्यापार, आहार आदि को सात्विक बनाना और जीवन में ब्रह्मचर्य, सन्तुष्टता, सहृदयता, शीतलता एवं, मधुरता, अनासक्ति एवं उपरामता, साक्षी स्थिति एवं न्यारापन, तथा नम्रता एवं निस्वार्थता रूपी दिव्य गुणों को धारण करना ही पवित्रता है। योग के विषय में भी हम स्पष्ट समझाते हैं कि व्यावहारिक जीवन में आत्मा के सर्व-सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ने, उस ज्योतिस्वरूप पिता की लगन में मग्न होना अथवा ईश्वरीय स्मृति में स्थित होना ही 'सहज राजयोग' है।

हम यह मानते हैं कि पवित्रता और योग दो मुख्य ईश्वरीय वरदान हैं जिनमें सभी वरदान समाए हुए हैं। इन वरदानों को प्राप्त करने से कुछ भी अप्राप्त नहीं रहता। ये दो वरदान हमारे पुरुषार्थ रूपी नाव के दो चप्पुओं के समान हैं जिनके द्वारा हम अपनी नाव को पार कर सकते हैं। यों भी कह सकते हैं कि ये दोनों पंख हैं जिनसे कि आत्मा रूपी पक्षी उड़ने में समर्थ हो जाता है और अपने धाम में जाने के योग्य हो जाता है। ये दोनों कैंची के दो फल की तरह भी हैं जिनसे कि हम अपने कर्मों के बंधनों को अथवा विकारों की रस्सियाँ काट कर इनसे मुक्त हो सकते हैं। इस प्रकार, 'पवित्रता' और 'योग' दोनों के इतने लाभ गिनाए जा सकते हैं और इनकी इतनी उपमायें दी जा सकती हैं कि जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन दोनों को मिला कर किये गये पुरुषार्थ को 'श्रेष्ठ पुरुषार्थ' कहा जा सकता है।

परन्तु हम सबको यह भी मालूम है कि अपने जीवन की व्यवसायिक या पारिवारिक ज़िम्मदारियों को निभाने के लिए भी हम सबको विविध प्रकार के कर्मों में व्यस्त रहना पड़ता है। कोई कपड़े का व्यापार करता है तो कोई मोटर-पार्ट्स का, कोई दफ्तर में जाता है तो अन्य कोई केमिस्ट की दुकान करता है। अपनी आजीविका-उपार्जन के लिए किसी को भी कोई व्यवसाय करने की मना तो नहीं है परन्तु हाँ, यदि कोई कर्म, 'पवित्रता' और 'योग' रूपी हमारे पुरुषार्थ में विघ्न रूप बनते हैं तो उनके लिए ये सोचना अथवा परामर्श लेना हमारी जिम्मेदारी हो जाती है ताकि हमारा वह व्यवसाय हमें ईश्वरीय वरदान लेने से वंचित न कर दे। व्यवसाय को विघ्न के बजाय साधन बनाना अथवा अपनी योग- साधना में उसे सहयोगी बनाना ही हमारा कर्त्तव्य है। यदि वह हमारी 'पवित्रता' अथवा हमारे योगी जीवन की धारणाओं को कहीं कमजोर करते हुए मालूम होता है तो उस विघ्न को हटाने के लिए उपाय करना ज़रूरी है। हम यह नहीं कह सकते कि हमारा धन्धा ही ऐसा है, वो हमारी पवित्रता और हमारे इस पुरुषार्थ में बाधा रूप है, तो अवश्य ही हमें इसका कुछ हल निकालने की ओर ध्यान देना ही चाहिये। क्योंकि जब हमने यह समझ लिया है कि 'पवित्रता' और 'योग' ही हमारा मूल एवं मुख्यतम पुरुषार्थ हैं और कि इनकी

जब हमने यह समझ लिया है कि 'पवित्रता' और 'योग' ही हमारा मूल एवं मुख्यतम पुरुषार्थ है और इनकी धारणा से ही हमें सर्व प्राप्तियाँ होती हैं तो निश्चय ही हम इन्हें तो किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते, बल्कि इनमें वृद्धि करते हुए हमें अपने मार्ग की बाधाओं को ही मिटाने का यत्न करना है।

धारणा से ही हमें सर्व प्राप्तियाँ होती हैं तो निश्चय ही हम इन्हें तो किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते, बल्कि इनमें वृद्धि करते हुए हमें अपने मार्ग की बाधाओं को ही मिटाने का यत्न करना है।

इस प्रकार, 'पवित्रता' और 'योग' हमारी धारणाओं के मापदण्ड हैं और हमें क्या करना है तथा क्या नहीं करना - इस प्रश्न के उत्तर के लिये ये निर्णय की कसौटी भी है। चाहे कोई उनसे मुक्त हो, अवकाश प्राप्त हो अथवा प्रभु-समर्पित जीवन व्यतीत करता हो, उसे पवित्रता और योग रूपी पुरुषार्थ में तो नित्य प्रति आगे बढ़ना ही है। अपने घर की परिस्थितियों को अपने पुरुषार्थ के लिये रुकावट मानना या समर्पित जीवन की किसी कठिनाई को कारण मानना तो एक प्रकार से अपने पुरुषार्थ के ढीलेपन के औचित्य को सिद्ध करने की कोशिश करना है। यह तो गोया स्वयं को स्वयं हानि पहुँचाना अथवा परमात्मा से मिलने वाले अनमोल वरदानों से वंचित रखना है। यह ईश्वरानुभूति नहीं है बल्कि परिस्थिति अनुभूति है जो कि हरेक व्यक्ति को सामान्यत: होती ही है। इसमें कोई विशेषता अथवा महानता नहीं है और सच तो यह है कि यह 'पुरुषार्थ' की परिभाषा में शामिल ही नहीं है।

जो कमज़ोर और दिलशिकस्त होते हैं वे ही परिस्थितियों और रुकावटों का वर्णन किया करते हैं और इस वर्णन के साथ-साथ उन्हें अपनी असफलताओं का कारण बताते हुए वे परिस्थितियों को दोषी बताते हैं। इसके विपरीत, जो महावीर होते हैं वे परिस्थितियों से जूझकर उनको पार करते हैं। उनका वर्णन सदा सफलता के प्रसंग में किया जाता है। अत: यदि कोई माता कहती है कि उसका पति पवित्रता और दिव्य गुणों की धारणा में नहीं चलता या कोई पति कहता है कि उसकी पत्नी पवित्रता एवं योग की इच्छुक नहीं है, या कोई युवक यह बताता कि उसके घर के दूसरे सदस्य उसकी बातों पर खिल्ली उड़ाते हैं और सहयोगी न बनकर उसके मार्ग में रुकावट डालते हैं तो उन्हें सोचना यह चाहिये कि हम पवित्रता और योग रूपी वरदान को तो किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते, अत: रुकावट रूपी कारणों का वर्णन करने के बजाय हम अपने घर के दूसरे सदस्यों को सहयोगी कैसे बनायें, या जब वे सहयोगी नहीं बनते तो हम उन द्वारा उपस्थित बाधाओं को पार कैसे करें? ईश्वरीय निश्चय की यही निशानी है, चिन्तनशील व्यक्ति का यही चिह्न है, सच्चे पुरुषार्थी का यही पुरुषार्थ है। रुकना उसका काम नहीं है, आगे बढ़ना ही उसका काम है।

यदि सेवा कार्य में लगा हुआ कोई गृहस्थी या समर्पित व्यक्ति, सेवा के कारण किसी संघर्ष में पड़ जाने से अपनी पवित्रता और योग की स्थिति को महान बनाने में बाधा महसूस करता है तो उसे भी चाहिए कि वह पहले अपनी स्थिति को पवित्रता एवं योग से ठीक बनाए क्योंकि श्रेष्ठ स्थिति से ही दूसरे की श्रेष्ठ सेवा भी हो सकती है। यह एक नियम है कि मनुष्य की जैसी स्थिति होती है वैसी ही उसकी कृति भी होती है अथवा जैसा रचयिता होता है वैसी ही उसकी रचना भी होती है। सेवा भी हमारी पवित्रता और योग की स्थिति को महान बनाने का एक साधन है। यदि हम उसे साधन के रूप में नहीं अपना सकते तो अवश्य ही हमारी ओर से ही उसमें कोई त्रुटि आई है जिसे निकालना ही हमारे लिए हितकर है।

उन्होंने रमणीक ढंग से बताया। साथ ही साथ ज्ञानवीणा के संपादक ब्र.कु.श्रीप्रकाश ने भी कहा की दुनिया में स्थूल चीज़ों से सुख और शान्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसके लिए हमें अध्यात्म की तरफ मुख मोड़ना चाहिए। रीवा सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. निर्मला द्वारा आत्मा तथा परमात्मा का परिचय देकर उन्हें सहज राजयोग का अभ्यास कराया गया। परमात्मा हमारा पिता है यह सम्बध जोड़कर कार्य करना चाहिए। हमें संसार को देना है न की लेने की भावना रखनी है। सतना सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. शीला द्वारा आये प्रमुख अतिथियों को आशीर्वचन तथा पुन: आगमन का निमंत्रण दिया गया।

बदलना है आचार -- पेज 12 का शेष

सुबह-सुबह आपको अपने दिन की शुरुआत अच्छे विचारों से करनी चाहिए। ब्र.कु. अनुज ने बताया की हम जो देखते, सुनते व करते उससे हमारा भाग्य बनता है । हमें अपनी सोच की क्वालिटी पर ध्यान देना चाहिए। यह

भरतपुर। राजस्थान की प्रमुख सांस्कृतिक एवं समाजसेवी संस्था ''लोक परिषद् भरतपुर'' द्वारा ओयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं पूर्व डेयरी मंत्री चौ. हरि सिंह, पूर्व विधायक सुरेश कुमार शर्मा, डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी, अमरसिंह, रमेशचंद्र पराशर, ब्र.कु.कविता व श्रीनाथ शर्मा।

सासाराम। सांसद एम. आर. चाडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

अकोला-महा.। विधायक हरिदास भदे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अर्चना।

कौशाम्बी। जिला कारागार में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.कमल, ब्र.कु.संगीता, ब्र.कु.भगवान, जेलर अरोरा एवं कारागार अधीक्षक लक्ष्मीनारायण दोहरे।

मनचेश्वर-भुवनेश्वर। विधायक प्रियदर्शी मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मंजु। साथ हैं महिला दक्षता समिति की अध्यक्षा उषा मोहन्ती।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। शिक्षक दिवस पर आयोजित परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु.विमला। साथ हैं प्राचार्य शोभा सिंह, ममता शर्मा तथा अन्य।